'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

# विनोबा-प्रवचन

( सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित )

वर्ष ३, अंक १४२ | वाराणसी, गुरुवार, १० दिसम्बर, १९५९ | पच्चीस रुपया वार्षिक

प्रार्थना-प्रवचन

तरनतारन (पंजाब) १४-११-'५९

## भारतीय इतिहास में नेहरू का स्थान

आज हमारे देश के एक महान नेता (पं० नेहरू) का जन्मदिन है। वैसे तो उनका और हरएक का जन्मदिन हर साल आता है। लेकिन पं० नेहरू का जन्मदिन एक विशेष प्रकार का है। आज उनको सत्तर साल पूरे हो रहे हैं।

### मुख्तलिफ शाखाओं में मुख्तलिफ महापुरुष

भारत का बड़ा भाग्य है कि यहाँ गये सौ साल के अन्दर जीवन की मुख्तलिफ शाखाओं में बहुत से महान पुरुष पैदा हुए। आध्यात्मिक क्षेत्र में, साहित्य के क्षेत्र में, लोकसेवा के क्षेत्र में, राजनीति के क्षेत्र में और संशोधन के क्षेत्र में भी जो महापुरुष पैदा हुए, उनसे इस बात का दर्शन हुआ कि यह देश बहुत पुराना होने पर भी इसकी बुद्धि को अभी तक थकान नहीं आयी है। इसकी बुद्धि बूढी नहीं बनी है। आध्यात्मिक क्षेत्र में रामकृष्ण परमहंस का नाम लेते हैं तो हमें मानना पडता है कि भारत में या दूसरे किसी देश में, किसी भी जमाने में जो महापुरुष पैदा हुए, उनके साथ बैठने लायक यह पुरुष इस जमाने ने पैदा किया। साहित्य के क्षेत्र में हम इस देश के और दूसरे देशों के अच्छे साहित्यिकों का नाम लेते हैं तो जैसे पुराने जमाने का कालिदास का नाम ले सकते हैं, वैसे ही इस जमाने में रविन्द्रनाथ ठाकुर का नाम ले सकते हैं। राजनैतिक क्षेत्र में भी भारत को एक के बाद एक बहुत बड़े महापुरुष का लाभ मिला है। दादाभाई नौरोजी, लोकमान्य तिलक, महात्मा गांधी और पंडित जवाहरलाल नेहरू—ये चार नाम ऐसे निकले कि दूसरे देशों के और दूसरे जमाने के ऊँचे से ऊँचे राजनैतिक पुरुषों के साथ हम इनका नाम ले सकते हैं। यह हमारे देश के लिए बड़े गौरव की बात है।

### भारतीय दिमाग की ताजगी

इस देश के लिए सबसे बडे गौरव की बात यह हुई कि जब यह देश राजनैतिक दृष्टि से गुलाम बना, अंग्रेजों के हाथ में चला गया तो यहाँके लोग न पस्तहिंमत हुए, न हमलावर हुए। अक्सर यह होता है कि जब कोई देश दूसरे देश पर कब्जा कर लेता है तो गुलाम देश में या तो छोटे-छोटे बलवे, दंगा-फसाद, बगावतें चलती हैं या वहाँके लोग पस्तहिंमत हो जाते हैं। कुछ भी नहीं कर पाते हैं। लेकिन भारत में इन दो में से कुछ भी नहीं बना। अगर यहाँपर छोटी-छोटी बगावतें चलतीं तो वे बेकार साबित हो जातीं। लेकिन यहाँके लोग इसका चिंतन करने लगे कि इतना प्राचीन देश दूसरों के कब्जे में क्यों आया। हमारे जीवन के बुनियादी विचारों में कहीं न कहीं कोई गलती होगी। हमारे आध्यात्मिक, सामाजिक, राजनैतिक विचारों में कुछ न कुछ खामी होगी। इसीलिए विदेश से मुट्ठीभर लोग यहाँ आये और उन्होंने अपना आधिपत्य चलाया। यूँ सोचकर उन खामियों की खोज में भारत का दिमाग लगा। इस चिंतन की फलश्रुति में यहाँ-पर राजा राममोहन राय, स्वामी दयानंद, महात्मा रानडे निकले, जिन्होंने अपने समाज की खामियों पर सोचकर समाज के सामने कुछ नये सामाजिक और धार्मिक सुधार पेश किये। हमें इसका बड़ा आश्चर्य मालूम होता है कि स्वामी दयानंद जैसा पुरुष इस जमाने में पैदा होता है और स्त्री-पुरुषों का दर्जा समान होना चाहिए, स्त्रियों को तालीम मिलनी चाहिए, छुआछूत, जाति-भेद मिटने चाहिए, यह सब कहता है, मूर्तिपूजा की बुराईयाँ बताता है, धर्म में फैले हुए भ्रमों को दूर करता है और पुराने वेदों के जैसे ग्रंन्थों की तरफ समाज का ध्यान खींचता है। याने समाज किन-किन बातों में गिरा हुआ था, इसका संशोधन करके सुधार पेश करता है। यह कोई छोटी चीज नहीं है। दूसरे देशों की तरफ देखने से पता चलता है कि देश परतंत्र होने पर भी हमारे देश के नेता हार नहीं खाते हैं, बल्कि आत्म-परीक्षण करते हैं। यह बताता है कि भारत के दिमाग में ताजगी थी।

### आध्यात्मिक संशोधन की प्रक्रिया

आज का हमारा जो चिंतन है, जिसमें से सत्याग्रह, सर्वोदय, भूदान, ग्रामदान, मालकियत मिटाना आदि सब बातें निकली हैं, वे सब बातें मूलतः आध्यात्मिक संशोधन के परिणामस्वरूप निकली हैं, जो एक बहुत बड़ी चीज है। महर्षि टॉलस्टॉय का दुनिया पर, गांधीजी पर और हमपर जो उपकार हुआ, वह तो मान्य ही है। लेकिन स्वामी दयानंद, राजा राममोहन राय, रानडे आदि ने समाज की बुराइयों का जो संशोधन किया था, उसका भी हमपर बहुत बड़ा उपकार है। उससे देश में नयी जागृति हुई। हमारे देश को स्वराज्य चाहिए था। उसके लिए

www.vinoba.in

राष्ट्रीय शिक्षण का विचार निकला, देश को स्वावलंबी होना चाहिए तो परदेशी माल बहिष्कार करने का विचार निकला। फिर यह सोचा गया कि हम अपनी छोटी-छोटी शिकायतें कहाँ तक पेश करें, तो यही करना होगा हम अंग्रेजों का सीधा मुकाबला करें। उसमें से सत्याग्रह का विचार आया। फिर यह विचार आया कि समाज की निचली जमातों को ऊपर लाना चाहिए। सर्वोदय का बीज इसीमें बोया गया था।

अब हम सर्वोदय का विचार आगे ले जा रहे हैं और कहते हैं कि गाँव स्वावलंबी बनने चाहिए। इस अर्थ में नहीं कि गाँववाले बाहर से कुछ भी नहीं लेंगे, बल्कि इस अर्थ में कि गाँववाले कहेंगे कि हम अपना नसीब खुद बनायेंगे। यहाँ तक हम पहुँच गये हैं। हिंदुस्तान का यह सारा अद्भुत इतिहास है। यह इतिहास बनाने में जिन महापुरुषों का हिस्सा है, उनमें पंडित नेहरू की गिनती है। परमात्मा का भारत पर महान अनुग्रह है कि नेहरूजी को सत्तर साल की उम्र में, अभी तक बुढ़ापा नहीं आया है। हम परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह उन्हें पूर्ण आयु दें। ● ● ●

प्रार्थना-प्रवचन

काशीपुरा (बड़ोदा) १४-१०-'५८

# आज हृदय-परिवर्तन में देर न लगेगी

आप भी जानते हैं कि ग्रामदान और भूदान का विचार लेकर गत साढ़े सात वर्षों से सारे भारत में मेरी पदयात्रा चल रही है। हजारों की संख्या में ग्रामदान हुए और लाखों एकड़ का भूदान मिला। फिर भी अभी हिन्दुस्तान में लाखों गाँव और करोड़ों एकड़ जमीन ऐसी है, जिसका दान नहीं हुआ है। इसका अर्थ यही है कि अभी काम बहुत करना है, थोड़ा-सा आरम्भ-मात्र हुआ है।

## प्रेम-कार्य धीरे-धीरे ही क्यों न हो ?

इस सभा में आने से पहले कुछ भाई मेरे पास चर्चा करने आये थे। उन्होंने जो सवाल पूछे, वे सब मुझे बहुत अच्छे लगे। इस तरह कोई चर्चा करता है तो मुझे अच्छा लगता है। सभी अच्छे ही लोग आये थे, अच्छी तरह सोच-विचार करने-वाले थे। एक भाई ने मुझे यह सलाह दी कि आपका काम प्रेम, शान्ति और हृदय-परिवर्तन से करना है, इसलिए यह काम धीरे-धीरे होगा, एकदम नहीं होगा। मैंने उनकी सलाह सुन ली। किन्तु मैं उनके सामने यह सलाह रखता हूँ कि आप सब लोग विचार कर इस काम को कीजिये। स्थिति जबतक सहन करने जैसी रहेगी, तबतक सहन कीजिये। लेकिन अगर ऐसा लगे कि अब यह स्थिति सह्य नहीं रही तो उसमें कुछ बदल होना चाहिए। दूसरी तरह से कुछ विचार कर, गाँववालों की स्थिति सुधारनी चाहिए, उन्हें सुखी बनाना चाहिए। आज हम जिस रास्ते से जा रहे हैं, हमें उससे अलग रास्ता अपनाना होगा। जिस तरह हवा पानी, सूर्यप्रकाश सबके लिए है, उसपर किसीकी मालकियत नहीं, उसी तरह जमीन सबकी है, उस-पर किसी की मालकियत नहीं है। इसलिए सबको जमीन मिलनी चाहिए। तभी सब सुखी होंगे। जब आपको यह विचार सूझेगा, तब आप अपना मार्ग बदल दीजिये।

## धीरे-धीरे हृदय-परिवर्तन के लिए हृदय तो कायम रहे

जब लोग प्रेम से काम करते हैं तो वह काम धीरे-धीरे होता है, ऐसा कुछ लोग समझते हैं। किन्तु मैं ऐसा नहीं मानता। साधारण जमाने में यह बात ठीक है कि प्रेम और हृदय-परिवर्तन की प्रक्रिया का मार्ग धीरे-धीरे चले। इसके लिए समय ज्यादा लगता है। किन्तु आज विज्ञान का जमाना आया है। देश में क्या स्थिति है, कब असंतोष प्रगट होगा, इसका टाईमटेबुल अभी तक बना नहीं है। विज्ञान के युग में एक वर्ष पुराने जमाने के दस वर्ष है। इस तरह स्वराज्य मिलने के बाद दस साल बीतने का अर्थ है, एक शतक बीत गया। अतः हम ऐसा काम धीरे-धीरे होता है, यह मान लें तो हमारे पैर के नीचे की जमीन खिसक जायगी। हम लोग कहींके न रहेंगे। इसलिए मैं चाहता हूँ कि सब लोग अच्छी तरह विचार करें, सोचें। धीरे-धीरे सोचें। पूर्ण विचार करें। विज्ञान का युग माँग कर रहा है कि यह काम जल्दी से जल्दी हो। सारी दुनिया को स्वतन्त्रता, समता और बंधुता का संदेश देनेवाला फ्रांस ही एक देश है। उसके बाद ही रूस वगैरह देश आये। लेकिन आज उसकी क्या स्थिति है ? आज के जमाने में धीरज नहीं रहा। आज अमेरिका ने एक लाख मील तक जो राकेट छोड़ा, वह एक लाख मील ऊपर जाकर वापस आया है। अतः अब यह आशा की जाती है कि अब तो कोई राकेट चन्द्र पर भी ले जा सकता है। जब ऐसी शक्ति जागृत हो गयी है, तब धीरे-धीरे हृदय-परिवर्तन से कैसे चलेगा ? मैं पूछता हूँ कि धीरे-धीरे हृदय-परिवर्तन करने के लिए हृदय तो कायम रहना चाहिए न ? आज तो यह भी आशंका हो चली है कि मनुष्य सदा के लिए नष्ट न हो जाय, जाति का खात्मा न हो जाय। ऐसी स्थिति में मनुष्य का दिमाग अभी भी पुराना रहा हो और वह चींटी की तरह "पिपीलिका-मार्गः" धीरे-धीरे चले तो काम कैसे होगा ?

## आज आत्मज्ञान को विज्ञान की मदद

आप भी जानते हैं कि केरल में साम्यवादी सरकार किस तरह बनी और वहाँ क्या काम हो रहा है। लोग साम्यवादियों को पसंद नहीं करते। साम्यवादियों के लिए उनके मन में बहुत अरुचि है। मैं कहता हूँ कि भाई, इस तरह अरुचि क्यों है ? हम हिन्दुस्तान का दारिद्र्य मिटाने का विचार न करें तो केवल अरुचि क्यों ? हृदय-परिवर्तन के लिए मानव-जाति को बहुत समय लगेगा, यह मानना ठीक नहीं। यह काम बहुत थोड़े समय में होना चाहिए और वह होगा। क्योंकि आत्मज्ञान की मदद में अब विज्ञान आ पहुँचा है। विज्ञान और आत्मज्ञान—दोनों एक ही प्रकार की आज्ञा दे रहे हैं। आत्मज्ञान तो पहले से ही कहता आया है कि आप सबको "मेरा-तेरा" छोड़ "हमारा-हमारा" बोलना चाहिए। अब विज्ञान भी इसी तरह की आज्ञा दे रहा है। आत्मज्ञान, विज्ञान दोनों को शक्ति जब एकत्र हुई है, तब आपका विचार इसके विरोध में कब तक टिकेगा ? आप सब विचार कीजिये तो मैं धीरे-धीरे चलने के लिए तैयार हूँ। वैसे तो दस मील ही चलता हूँ। मेरी चाल तो धीमी ही है। किन्तु आपकी चाल धीमी कहाँ है ? आप सरकार के पास क्या माँगते

www.vinoba.in

हैं ? "हमें रास्ता चाहिए, रेल्वे चाहिए," इस प्रकार की आपकी माँग रहती है। यह कभी नहीं कहते कि 'हमें अब पैदल घूमना है, इसलिए अहमदाबाद से बड़ोदा तक जो ट्रेनें चलती हैं, उन्हें जल्दी से जल्दी बन्द करो, ताकि हमारा काम धीमी गति से चले।' वास्तव में आपको ही उतावली है। मैं तो धीमी गति से ही चल रहा हूँ और इससे भी धीमी गति से चलने के लिए तैयार हूँ, अगर कोई मुझे यह आश्वासन (गारंटी) दे दे कि विज्ञान-युग में जो स्थिति दुनिया के दूसरे देशों में हुई है, वह हमारे देश में कभी न होगी।

## आज के युग को पहचानिये

जो लोग इतिहास ही नहीं जानते कि यह भूदान का काम किस तरह शुरू हुआ, उनसे क्या कहा जाय ? यह काम उस समय शुरू हुआ, जब कि हैदराबाद में ३०० मनुष्यों का कतल हुआ और सारे जमींदार बहुत घबड़ाकर हैदराबाद चले गये। मुझे धीमी गति से चलने की सलाह देनेवालों ने क्या कभी वहाँ पहुँचकर भूदान आदि द्वारा शान्ति-स्थापना की ? जो मनुष्य शान्ति के लिए मन में तड़पन लेकर समाज में घूम रहा हो और यह चाहता हो कि हिन्दुस्तान के सवाल ढाँकने से हल नहीं होंगे। याने जो यह चाहता हो कि सवालों को बिलकुल आँख के सामने रखकर हिम्मत के साथ उनका हल करने की कोशिश की जाय तथा जो शान्ति का रास्ता लेकर निकला हो, उसे आप धीमी गति से चलने के लिए कहते हैं तो क्या आप जानते हैं कि आप किस युग में रह रहे हैं ? जिस युग में देखते-देखते चन्द्र पर पहुँचने का प्रयत्न हो रहा है, उस युग में आप हैं, इसका खयाल कीजिये। जरा सोचिये कि प्रशान्त महासागर दस हजार साल से जापान और अमेरिका को तोड़ने का काम कर रहा था। लेकिन आज वही दोनों को जोड़ने का काम कर रहा है। इसीलिए आज जापान और अमेरिका दोनों पड़ोसी देश हो गये। दोनों के बीच दस हजार मील का एक छोटा-सा समुद्र है। समुद्र पार करने के लिए अब पूरे बारह घंटे भी नहीं लगते। सुबह बैठेंगे तो शाम के पहले खाने के लिए अमेरिका में पहुँच सकते हैं। जब ऐसे जमाने में आप रहते हैं, जब तोड़नेवाला समुद्र भी इस जमाने में जोड़नेवाला बनता है, तब लोग भूल जायँगे कि हम छोटा उदेपुरवाले हैं और हमारा यह पुराना जंगल है।

## गाँव-गाँव अपनी योजना करें

यहाँ गाँव को पिछड़ा हुआ मानना निरी मूर्खता है। यह एक स्टेट का विभाग है। किन्तु सरकार सारे देश पर राज्य करती है। वह पंचवर्षीय योजना बनाती है, जिसके लिए सारी दुनिया से मदद मिलती है। किन्तु मान लीजिये, दुनिया में कहीं लड़ाई फूट निकले तो बाहर से मिलनेवाली सारी मदद एकदम बंद हो जायगी और भारत का आयात-निर्यात टूट जायगा। इसका अर्थ इतना ही है कि जो साधारण शान्ति के समय में चलता है, वह नहीं चलेगा। गाँव-गाँव में लोग भूखे मर सकते हैं। गाँव अनाज वगैरह के बारे में स्वावलंबी न हो और ग्रामदान लोगों ने न किया हो, अपने गाँव का कारोबार अपने हाथ में न लिया हो तो सरकार अपनी सारी जिम्मेवारी समझ सके, ऐसी हालत नहीं है। यह बात मैं ही नहीं कहता, सरकार के लोग भी ऐसा ही कहते हैं। वे कहते हैं कि गाँव-गाँव के लोग अपनी योजना करेंगे, तभी हिन्दुस्तान टिकेगा।

## ग्रामदान प्रेम से होगा, डरा-धमकाकर नहीं

मैं ग्रामदान माँगता हूँ, इसका अर्थ क्या है ? ग्रामदान होगा, तो गाँव के लोग अपनी योजना करेंगे। गाँव की जिम्मेवारी वे उठा लेंगे। गाँव-गाँव में स्वराज्य होगा। ग्रामदान में डरने की कोई भी बात नहीं है। आज मुझे कहा गया है कि यहाँ लोगों को धमकाकर ग्रामदान लिये गये हैं। लेकिन धमकाने से ग्रामदान नहीं हो सकता। जिसके पास धमकाने की शक्ति ही नहीं, वह धमकाने के लिए समर्थ कैसे होगा ? इसमें अगर धमकाने की बात होती तो पैदल-पैदल घूमने की कोई भी जरूरत न थी। तब तो आधुनिक शस्त्रों का उपयोग करना चाहिए था। पर बाबा तो लकड़ी लेकर भी नहीं चलता। हाँ, रविशंकर महाराज चलने के लिए लकड़ी का उपयोग करते हैं। किन्तु कोई इस लकड़ी का उपयोग करना चाहे, महाराज को पीटना चाहे तो महाराज को लकड़ी से ही पीट सकता है। अतः महाराज की लकड़ी उनके काम के लिए नहीं है, वह सामनेवाले मनुष्य के लिए ही है। मेरे इस कहने का आशय यह है कि इस काम में कोई व्यक्ति गाँववालों को धमकाता हो तो वह बिलकुल मूर्खता है। यह काम तो प्रेम से ही हो सकता है, धमकाने से नहीं। अगर यह काम धमकाने से हो सकता तो हम राज्य की मदद क्यों नहीं लेते ? चुनाव में हम खड़े होते और सफल होकर सत्ता भी हाथ में लेते। जो काम दूसरे लोग कर सकते हैं, वह बाबा और उसके साथी नहीं कर सकते, ऐसा नहीं। जो चाहता है, वह कर सकता है। अतः यह डरा-धमकाकर करने का काम नहीं है। विज्ञान के युग में जबरदस्ती से जो काम होता है, वह सब दृष्टियों से मानवजाति के लिए हानिकारक है।

## ग्रामदान नहीं, उसका न होना ही भयानक

इसलिए ग्रामदान में डरने की थोड़ी भी बात नहीं है। ग्रामदान याने निर्भयता। मैं तो यहाँ तक कहता हूँ कि ग्रामदान का न होना यही एक अत्यन्त भयानक अवस्था है। अगर गाँव-गाँव के लोग अपने गाँव की योजना स्वयं करें तो हिन्दुस्तान सुरक्षित है और वह दुनिया को राह दिखा सकता है। मैं यह नहीं कहता हूँ कि आप उसका विचार उतावलेपन से कीजिये। विचार करने के लिए विवेकपूर्वक दो-तीन बार चर्चा करें, शंका-समाधान कर लें और फिर समाधानपूर्वक विचार करें। फिर भी जरा जल्दी ही विचार करें, क्योंकि यह जमाना दूसरा है। यह आप भी समझ सकते हैं। इतना आप नहीं समझ सकते, ऐसी स्थिति में आज नहीं हैं।

## प्रेम और सेवा की सत्ता हाथ में लें

मैं आपके हाथ में नेतृत्व देना चाहता हूँ, सत्ता देना चाहता हूँ। सत्ता हाथ में लेने के लिए पहले अपना स्वयं का अस्तित्व मिटा देना पड़ता है इसके लिए अपने पास जो कुछ हो, सारा गाँव का मानना चाहिए और गाँव का जो कुछ हो, वह अपना है। इस तरह प्रेम और सेवा की सत्ता हाथ में लेकर गाँव का आयोजन करें, इतनी ही मेरी माँग है। बाकी अगर किसी-किसीने धमकाकर लिया हो तो वह कुछ भी काम का नहीं, बिलकुल निकम्मा है। जिसने आपको धमकाया हो, उसे मेरे पास लाइये। मैं उससे कहूँगा कि तुमने बहुत ही गलत काम किया। किन्तु इसके लिए सबूत मिलना चाहिए। जो मनुष्य सिर्फ बातें ही करे, गंभीर आक्षेप करे, पर उसके लिए सबूत पेश न करे तो मैं क्या कर सकता हूँ, पर अगर यह आक्षेप सच साबित हो तो यह काम गलत हुआ है, ऐसा जाहिर करने के लिए मैं तैयार हूँ। ● ● ●

www.vinoba.in

प्रार्थना-प्रवचन

रंगपुर (बड़ोदा) १५-१०-'५८

# ग्रामस्वराज्य के लिए देशव्यापी वातावरण का निर्माण अनुपेक्षणीय

बहुत वर्षों से यह रंगपुर आश्रम काम कर रहा है। यहाँ श्री हरिवल्लभ भाई पारीख काम करते हैं। आश्रम आसपास के गाँववालों की सेवा करता है। यह देख मुझे बहुत बड़ा संतोष हुआ। आश्रम से दो-तीन बातों की अपेक्षा की जाती है और इससे मैं भी वही अपेक्षाएँ रखता हूँ।

## आसपास के लोगों को राहत मिले

पहला काम यह है कि जिस तरह ठंड लगने पर सब अग्नि के अगल-बगल बैठ जाते हैं, उसी तरह आश्रम के आसपास के गाँववालों को भी राहत मिलनी चाहिए। आश्रम का स्थान अग्नि जैसा होना चाहिए। किसी भी व्यक्ति को कोई भी दुःख हो तो वह आश्रम में आकर उसकी सेवा ले। सभीको कुछ न कुछ राहत, किसीको कुछ सांत्वना, किसीको कुछ उपदेश मिले। आश्रम को अपने काम में ही व्यस्त न होना चाहिए। वह आसपास के गाँववालों की आशा का एक स्थान हो। यह हो सकता है। अतः आश्रम के लोग आसपास के गाँववालों के जीवन के साथ अपना जीवन एकरूप करने की कोशिश करें।

## नयी से नयी ज्ञान-चर्चा हो

दूसरी बात, आश्रम में गाँववाले और शहरवाले आकर ज्ञान-चर्चा करें और नवीन-नवीन विचार समझें। आश्रम में निरन्तर विचार-चर्चा चलनी चाहिए। निरन्तर ज्ञान-चर्चा चलने से ही मनुष्य-समाज प्रगति कर सकता है। नहीं तो जमाना आगे बढ़ जायगा और मानव पीछे ही रह जायगा। इसलिए आश्रम में जमाने की गति पहचानकर बिलकुल आखिरी, नया से नया विचार समझने की कोशिश होनी चाहिए।

## जीवन-संशोधन का काम हो

तीसरी बात, आश्रम में जीवन-संशोधन का काम होना चाहिए। हिन्दुस्तान में हम सब जो जीवन जीते हैं, उसमें कुछ अंश बहुत अच्छा है। जैसे– भक्ति, प्रेम, परस्पर सहकार करने का विचार। ये सारे विचार हमारी सभ्यता और जीवन में अत्यन्त उत्तम हैं, किन्तु उसीके साथ हममें परंपरा से कुछ दोष भी चले आये हैं, उनका निराकरण करना चाहिए। गुणों को बढ़ाने के लिए संशोधन होना चाहिए। संशोधन का अर्थ है सुधार। नये-नये औजारों और जीवन की पद्धति का संशोधन हो। जिस तरह खाने में, पीने में, सोने में मकान और रास्ता बनाने में संशोधन होता है, उसी तरह जीवन की पद्धति में भी संशोधन आवश्यक है। याने अपने दोषों का संशोधन, औजारों का संशोधन, अपनी जीवन-पद्धति का संशोधन होना चाहिए। आज हमारे देश में छूत-अछूत-भेद, शराब, ताड़ी वगैरह बुरे व्यसन, बुरी आदतें, गंदा रहना आदि दोष भरे हैं। इन सारे दोषों का निराकरण करने का संशोधन आश्रम में होना चाहिए।

एक बात है, ज्ञानविज्ञान की चर्चा, दूसरी बात है, जीवन-संशोधन की चर्चा और तीसरी बात है, आसपास के गाँववालों की प्रेममय सेवाएँ। तीन चीजें आश्रम में होन चाहिए। यह तो आश्रम के विषय में प्रस्तावनारूप से एक बात की।

## मेरा अभी तक आश्रम-जीवन

सन् १९१६ में जब मैं गांधीजी के पास उनके आश्रम में पहुँचा, तबसे अभी तक आश्रम में ही हूँ। सात-आठ साल से मैं घूमता-फिरता हूँ तो भी अभी मैं आश्रम में ही रहता हूँ। मेरा पता "विनोबा-आश्रम" ही है। इसीलिए अभी हमारा जीवन आश्रम के ढंग से ही चल रहा है। रात को निश्चित समय पर सोना, निश्चित समय पर सुबह उठना, सुबह-शाम दोनों समय प्रार्थना आदि। जितना चलना है, उतना चलना, खाने का समय निश्चित रखना और जो खाना हो, वही चीज खाना–यह सारा चलता है। सिर्फ एक ही बात ऐसी है, जो आश्रम में नहीं होनी चाहिए, पर हमसे हो रही है। उसके लिए मैं शर्मिन्दा भी हूँ। बाकी सब तरह से मैं आश्रम में ही रहने की कोशिश करता हूँ। १९१६ से १९५८ तक—४२ साल सतत आश्रम में ही रहने से आश्रम कैसा होना चाहिए, यह मेरा विचार अनुभव से बना है और वह मेरे पास है। यह भी एक आश्रम का स्थान है और मेरा ही स्थान है। यही समझकर ये सारी बातें मैं आपसे कह रहा हूँ।

## मुझपर दो बार गोलीबार

अभी मैंने कहा कि आश्रम में जो बात नहीं होनी चाहिए, वह हो रही है। उसके सिवा दूसरी कोई भी बात ऐसी नहीं। अनजान से कोई भूल होती हो तो वह अलग है, परन्तु जानबूझकर आश्रम में न करने जैसी बात हम कभी नहीं करते हैं। दूसरी सारी बातों में हमारा काम कुशलता से चलता है। किन्तु आश्रम में न करने जैसी बात है कि बीमार न पड़ना। यह मुझसे नहीं सधता। आपसे अभी कहा गया है कि मैं बीमार था और मुझपर दो बार गोलीबार करना पड़ा। दो दिन मुझे केमोक्वीन की दो गोलियाँ लेनी पड़ीं। इन गोलियों को मैं गोलीबार ही मानता हूँ। यह गोली लेते समय उतना ही दुःख होता है, जितना गोलीबार करते समय गोलीबार की आज्ञा देनेवाली सरकार को होता है। लेकिन कल एक नया डॉक्टर आया और मुझे एक नयी सलाह दी कि "दूसरे प्रकार की क्वीनाईन की तीन गोलियाँ लीजिये।" मैंने उनसे कहा–"आपका जो कारतूस वगैरह हो, उसे मेरे पास रखकर जाइये"। उस डॉक्टर ने मेरे पास गोलियाँ रख दीं। हमेशा मैं जो गोलियाँ लेता हूँ, उनसे ये भिन्न हैं। किन्तु आज परमेश्वर की इच्छा ऐसी थी कि सुबह ही बुखार हट गया तो मुझे उस गोली के प्रति आदर बढ़ा। उसके नाममात्र से, स्मरणमात्र से मेरा बुखार मान गया। दुनिया में ऐसी दवा की खोज होनी चाहिए कि उसके नाममात्र से ही बुखार भाग जाय।

## बीमारी हमारी भूल से, आराम भगवान की दया से

गत ६-७ सालों में कुल मिलाकर आठ-नौ गोलियाँ मैंने ली होंगी। इससे ज्यादा दूसरी कोई भी दवा मेरे पेट में नहीं गयी। वस्तुतः दवा की कोई जरूरत ही नहीं। फिर भी कुछ भूल हो जाती है, इसके लिए दवा खाने का अवसर आता है। अतएव हम बुखार के लिए ईश्वर को जिम्मेवार नहीं मानते। वह हमारी अपनी खुद की कमाई है। उसकी दुरुस्ती परमेश्वर की खुद की ही है। दुरुस्त तो भगवान ही करता है, भले ही हम दुरुस्त होकर डॉक्टर को श्रेय दें। डॉक्टर और रोगी के बीच एक करार हो गया है और इसलिए डॉक्टर सुरक्षित है। डॉक्टर की दवा लेकर रोगी अच्छा हुआ तो डॉक्टर की महिमा गाता है, डॉक्टर की

www.vinoba.in

ख्याति होती है। अगर डॉक्टर की दवा काम न आये और रोगी मर जाय तो प्रारब्ध या परमेश्वर पर सारी जिम्मेवारी सौंपी जाती है। रोगी मर जाय तो जिम्मेवार परमेश्वर और बच जाय तो जिम्मेवार डॉक्टर। इस तरह से डॉक्टर की अपनी महिमा है। दोनों ओर से डॉक्टर को ही श्रेय मिलता है। लेकिन यह विभाजन सर्वथा अन्याय का है। या तो दोनों की जिम्मेवारी परमेश्वर पर सौंपे या डॉक्टर स्वयं उठाये।

अगर मैं एक जगह बैठा होता तो इस तरह कभी न करता। किन्तु घूमने का मोह है, सेवा होती है और यात्रा का कार्यक्रम निश्चित हो गया है, बीच में रुकना ठीक नहीं। इसलिए गोलीबार करना पड़ता है। यही एक बात छोड़ दें तो आश्रम के किसी भी नियम का भंग न करने में मैं सावधान रहता हूँ। अतः आश्रम के लिए मैंने जो तीन बातें बतायी हैं, उनपर अगर आप ध्यान दें तो आश्रम के हाथों से बहुत सेवा होगी, आश्रम का अपना उद्धार होगा और प्रजा को भी लाभ होगा।

## ग्रामदान में किसी तरह डरने की बात नहीं

अब ग्रामदान की बात। बहुत-से गाँवों का ग्रामदान होता है तो उसका मुझे आश्चर्य नहीं होता। लेकिन जिस गाँव का ग्रामदान नहीं होता, उसका मुझे आश्चर्य होता है। जहाँ ग्रामदान होता है, वह तो ठीक है, अच्छा विचार सबको समझ लेना चाहिए और पसन्द भी आना चाहिए। किन्तु कुछ लोगों को भय लगता है। कल ही कुछ लोग कहते थे कि "ग्रामदान का विचार जोर-जबर्दस्ती से समझाया जाता है, इसीलिए लोग डर जाते हैं।" यह तो पूर्ण प्रेम का विचार है। "मांही पड्यां ते महा सुख माणे, देखनारा दाझे जो ने।" अर्थात् जो ग्रामदान में कूद पड़े हैं, वे महान सुख पायेंगे और जो उसमें दाखिल होने से डरेंगे, उन्हें सुख नहीं मिलेगा। फिर जो लोग कूद पड़े हैं, उन्हें देख भले ही दूसरे लोग घबड़ा जायँ। हमें उनसे कहना चाहिए कि आप डरते हैं तो ग्रामदान में मत आइये। किन्तु देखनेवाले को डर लगता ही है। मैं तो सभी लोगों को आश्वासन देना चाहता हूँ कि अगर आप लोग अभी ग्रामदान में दाखिल नहीं होना चाहते तो आपपर किसी प्रकार की जबरदस्ती नहीं। जो दूसरे लोग ग्रामदान में दाखिल होते हैं, वे क्या करते हैं, यह आप एक बार देख लीजिये। किन्तु कृपा कर उनके मन में भी आप डर मत पैदा कीजिये।

एक बात यह कि ग्रामदान में डर से दाखिल नहीं होना चाहिए। दूसरी बात, डर के कारण ग्रामदान से अलग नहीं रहना चाहिए। दोनों ओर से डर नहीं होना चाहिए। यह काम ही प्रेम का काम है। समझने की बात है और समझकर करने का काम है। ग्रामदान होकर सारे भाई एकत्र हों और एक-दूसरे को मदद करें, बुरी आदतें, व्यसन वगैरह छोड़ दें और प्रेम से रहने लगें तो हिन्दुस्तान का उद्धार होगा। अगर हम यह नहीं करते तो हमें स्वराज्य का लाभ न मिलेगा, यह बात निश्चित है। इसलिए ग्रामदान के बारे में सबको अत्यन्त निर्भय होकर विचार करना चहिए।

आज यहाँ ग्रामदानी गाँवों से और इस प्रदेश से भी कुछ लोग आये हैं। उन्होंने कुछ सवाल पूछे हैं, जिनका मैं क्रमशः उत्तर दूँगा।

## ग्रामदान के बाद सर्वप्रथम ग्रामसभा बने

१. प्रश्नः—ग्रामदान के बाद बँटवारा तुरन्त ही होगा या कुछ नियत समय के बाद? अगर बँटवारा तत्काल नहीं हुआ तो उसे ग्रामदान कैसे कहेंगे?

उत्तरः—ग्रामदान के बाद तुरन्त करने का काम ग्रामसभा बनाना है। ग्रामसभा याने पाँच व्यक्तियों की सभा नहीं। पाँच या सात व्यक्तियों की सभा तो "ग्राम-समिति" कहलायेगी। "ग्रामसभा" तो वह होगी, जिसमें गाँव के २१ साल का हर व्यक्ति सदस्य होगा। सारे गाँव की जमीन ग्रामसभा की मानी जायगी। फिर उसकी ओर से काम करने के लिए एक सेवक-समिति होगी, जो ग्राम-समिति कहलायेगी और उसमें ५-७ व्यक्ति होंगे। ग्रामसभा में सब मिलकर एकमति से ग्राम-समिति का नाम पसंद करेंगे और जिस नाम के विषय में एक भी भाई का विरोध हो, वह नाम न आयेगा। इस तरह की समिति केवल सेवा करनेवाली होगी, मालिक नहीं। मालिक-समिति तो ग्रामसभा ही होगी। सेवक-समिति जो कुछ निर्णय लेगी, वह एकमति से लेगी और फिर अपना निर्णय ग्राम-सभा के सामने रखेगी। ग्रामसभा को वह समझायेगी, लेकिन आखिरी निर्णय ग्रामसभा ही करेगी। अतः सर्वप्रथम ग्रामसभा बननी चाहिए। मैं जानता हूँ कि तुरन्त ही यह काम नहीं होगा, १५-२० दिन लग जायँगे। किन्तु जहाँ ग्रामसभा बनी, वहीं ग्रामदान के काम की शुरूआत हो गयी, यह कहा जायगा। फिर जमीन के बटवारे का सवाल आयेगा तो वह उसके बाद लिया जायगा।

## क्या व्याख्या के विपरीत भी ग्रामदान मान्य होंगे?

२. प्रश्न :—सर्व-सेवा-संघ की व्याख्या के अनुसार जो ग्रामदान नहीं हुए हों, क्या उन्हें ग्रामदान माना जायगा? उस व्याख्या के पहले जो ग्रामदान हुए और उसके बाद जो ग्रामदान हुए, क्या ऐसे गाँवों को ग्रामदान में गिनेंगे?

उत्तर :—सर्व-सेवा-संघ ने निर्णय किया है कि "गाँव में ८० प्रतिशत लोगों ने जमीन दान में दी हो और ५० प्रतिशत जमीन दान में आयी हो तो वह ग्रामदान कहलायेगा।" ऐसा होने के बाद उस गाँव की रजिष्ट्री सरकार में होगी और सरकार स्वीकार करेगी कि हम उसे मानते हैं। किन्तु सरकार करे, इसका अर्थ यह नहीं कि जो लोग ग्रामदान में दाखिल नहीं होते, उन्हें सरकार कानून के रूप से ग्रामदान में दाखिल करेगी। कुछ लोग ऐसा समझ बैठे हैं कि ग्रामदान होने के बाद जो लोग ग्रामदान में दाखिल नहीं हुए हैं, उन्हें जबरदस्ती ग्रामदान में दाखिल होना पड़ेगा। लेकिन यह बात गलत है, क्योंकि यह सर्वदा स्वेच्छा का प्रश्न है। स्वेच्छा से ८० प्रतिशत लोग दाखिल हों और स्वेच्छा से ५० प्रतिशत जमीन आ जाय तो उसे सरकार ग्रामदान के तौर पर मान्य कर लेगी। किन्तु जहाँ-जहाँ इतनी प्रतिशत जमीन और इतने प्रतिशत लोग न मिलेंगे, उससे कम ही मिलेंगे तो ऐसे गाँवों को भी नोट कर लिया जायगा, भले ही उसे ग्रामदान में न मानकर अलग परिवार में ही मानिये। फिर यह प्रयत्न किया जा सकता है कि जैसे सरकार सारे ग्रामदान को मान्यता देती है, वैसे ही इसे भी दे। सरकार से वह मान्यता मिले या न मिले, यह बात अलग है। किन्तु ऐसे गाँव के लिए भी हमारी मान्यता है ही।

## ग्रामदान में उचित लोभ गलत नहीं

३. प्रश्न :—ग्रामदान में भय नहीं होना चाहिए, फिर लोभ भले ही हो, क्या आप ऐसा मानते हैं?

उत्तर :—ग्रामदान में भय नहीं चाहिए, यह तो मैंने कह दिया है। ग्रामदान और भय दोनों का मेल ही नहीं बैठता है। ग्रामदान तो निर्भय होकर ही हो सकता है। मनुष्य के जीवन में कुछ-न-कुछ लोभ होता ही है। इसीलिए वह काम करता है। अतएव हमें लोभ में, योग्य और अयोग्य यह फर्क करना ही चाहिए। मान

www.vinoba.in

लीजिये, कोई मनुष्य कोई उद्योग करता है तो लाभ के विचार से ही करता है। किन्तु उस उद्योग से गलत, अयोग्य लाभ लेने की बात हो तो वह गलत लोभ कहलायेगा। अनुचित लाभ उठाने की बात न हो और उचित लाभ ही लेना चाहें तो वह योग्य लोभ होगा।

मान लीजिये, ग्रामदान में हम सब एकत्र होकर विचार कर सकते हैं और गाँव की फसल बढ़ा सकते हैं। ग्रामदान बनने के बाद सहकारी समिति बनाते हैं तो आज की सहकारी समिति के दोष उसमें न आयेंगे। आज तो उसमें मालिक दाखिल होते हैं और हरएक मालिक को उसकी अलग-अलग मालकियत के अनुसार अलग-अलग नफा मिलता है। जब ग्रामदान होगा तो सहकारी समिति बहुत अच्छी होगी और वह बाहर से मदद भी प्राप्त कर सकेगी। इससे गाँव को लाभ होगा तो कार्यकर्ता भी गाँव को इसमें सलाह देता रहेगा। सरकार ने घोषित किया है कि जहाँ ग्रामदान होगा, वहाँ कम्युनिटि प्रोजक्टवाले भी अधिक ध्यान दे सकेंगे। सरकार ने यह मान्यता दी है। इस तरह गाँव के लोगों को कुछ-न-कुछ लाभ अवश्य होगा और कोई व्यक्ति ऐसा सोचता है तो उसमें कुछ भी गलती नहीं है।

किन्तु ग्रामदान का यह अर्थ नहीं कि खुद आलसी बनकर हमें कुछ करना नहीं है, बाहर से ही सारी मदद आयेगी। गाँववाले यह कहेंगे कि अगर हमें बाहर से कुछ न मिले तो हम ग्रामदान क्यों करें? तो यही कहना होगा कि जिन्होंने उन्हें ग्रामदान समझाया, उन्होंने वह ठीक तरह से नहीं समझाया। ग्रामदान होगा तो बाहर से कृपा बरसेगी, इस तरह का आश्वासन देना गलत है। ग्रामदान होने के बाद तुरन्त ही आपको शक्ति का अनुभव होना चाहिए। ग्रामदानी गाँव हड़ताल या झगड़ा करे, यह गलत है। ग्रामदान के बाद झगड़ा कम होना चाहिए। सब एक-दूसरे की मदद करें, भूमिहीनों को भूमि मिले। जहाँ जो ग्रामदान हुए हैं, वहाँ भूमिहीनों को भूमि मिलती हो, गाँव के झगड़े गाँव में ही हल होते हों, गाँव में भजन-मण्डली तैयार हो जाय, परस्पर प्रेम, करुणा, हिम्मत और सहकार बढ़े तो वह ग्रामदान समर्थ होगा और गाँव को लाभ होगा। गाँव का आरोग्य बढ़ेगा। इस तरह का लोभ अगर ग्रामदान के लिए हो, उससे लोग ऐसी अपेक्षा रखते हों तो वह गलत लोभ नहीं होगा। मुख्य बात यह है कि ग्रामदान होने के बाद तुरन्त ही लोगों को अपनी शक्ति महसूस होनी चहिए।

## सामूहिक संकल्प होते ही ग्रामदान का विज्ञापन करें

४. प्रश्न :—ग्रामदान का विज्ञापन कौन और कब करे?

उत्तर :—ग्रामदान का विज्ञापन ग्रामदानी गाँव के लोग ही करें कि हमने ग्रामदान किया है। वे अपने गाँव में एक बोर्ड पर लिख दें कि हमारा गाँव ग्रामदानी गाँव है। अब हमारी सगाई हो गयी है। सगाई और विवाह में जो अन्तर रहता है, वह रहेगा। जब ग्रामसभा बनेगी, तब हमारा विवाह होगा और जब जमीन का बँटवारा होगा, तब तो हमारी गृहस्थी ही शुरू होगी। अतः जब हम सबने मिलकर यह संकल्प किया तो भी हमारी सगाई हो गयी, ग्रामदान हो गया। किन्तु कुछ लोग ऐसे होंगे, जो ग्रामदान में दाखिल नहीं हुए हैं। उनसे यही कहना चाहिए कि "आप हमारे भाई हैं, आपपर हमारा पूर्ण विश्वास है। आप आज नहीं तो कल ग्रामदान में जरूर आयेंगे। इसकी हमें कोई फिक्र नहीं।" आज गाँव में ८० प्रतिशत लोग दाखिल हो गये हैं और ५० प्रतिशत जमीन ग्रामदान में आ गयी है। इसलिए हमने जाहिर किया है कि ग्रामदान हो गया है। फिर भी आपको उसमें दाखिल होना ही पड़ेगा, ऐसी बात नहीं। आप बिलकुल निश्चिंत रहें। आपकी जमीन में हम ग्रामसभा की ओर से काश्त करेंगे। अब तक तो आपके खेतों में मजदूर काम करते थे, पर अब ग्रामसमिति काम करेगी। आपको जो देना है, वह हम बराबर देंगे, उसके लिए आप डरिये नहीं।

इस तरह से ग्रामदान का विज्ञापन होने के बाद रंगपुर आश्रम पर रंग चढ़ आयेगा। ग्रामदान का एक पत्रक है; उसमें सबका हस्ताक्षर लिया है। कितने लोगों ने जमीन दी, कितने लोगों को जमीन दी। इस तरह से गाँव की सब जानकारी जाहिर करनी चाहिए। ग्रामदान जाहिर करने में कोई हर्ज नहीं है।

## समय की प्रतीक्षा की जरूरत नहीं

कुछ लोग मुझसे पूछते हैं कि ग्रामदान होने के बाद अगर लोग उसे पीछे ले लें तो आप क्या करेंगे? इसलिए ५-६ महीने राह देखने के बाद ही ग्रामदान की घोषणा क्यों न की जाय? मैं कहता हूँ कि हिन्दुस्तान में कच्चा और पक्का ऐसा कुछ नहीं होता। जो होता है, वह सब पक्का ही होता है। जो संकल्प करते हैं, वह पक्का ही होता है। इसपर भी कोई गाँव अपने संकल्प से मुकर जाय तो मुकरने दीजिये। हमें कोई हर्ज नहीं। शिवाजी महाराज एक के बाद एक किला हासिल करते गये। दस किले उन्होंने जीत लिये तो उसमें से एक किला फिर से शत्रु ने वापस ले लिया। फिर भी शिवाजी महाराज तो आगे-आगे बढ़कर दूसरे किले जीतते ही जाते थे। इस तरह से सभी आंदोलनों में होता है। इसमें डरने का कोई कारण नहीं। इसलिए संकोच नहीं रखना चाहिए। फिर भी ढोल पीटने की भी जरूरत नहीं रहती कि इतने ग्रामदान हुए। इस तरह धीरे-धीरे सावधान रहकर हम सब आगे बढ़ें।

## ग्रामदान के रजिस्ट्रेशन का तंत्र

५. प्रश्न :—ग्रामदान घोषित होने के बाद उसके सुव्यवस्थित रजिस्ट्रेशन का कोई तंत्र है या नहीं? अगर हो तो बताइये।

उत्तर :—यह सब काम सर्व-सेवा-संघ करता है। सर्व-सेवा-संघ यह एक अव्यक्त संस्था है। हिन्दुस्तान के कुछ विभागों में यह व्यक्त है और कुछ विभागों में अव्यक्त। रंगपुर आश्रम सर्व-सेवा-संघ का अव्यक्त रूप है। रंगपुर में जो भाई जो-जो ग्रामदान करेंगे, उसे सर्व-सेवा-संघ मान्य कर लेगा। इस तरह जहाँ-जहाँ आश्रम, नयी तालीम, खादी ग्रामोद्योग आदि रचनात्मक काम करनेवाली संस्थाएँ हैं, सर्व-सेवा-संघ के वे अपने कार्यालय हैं। वहाँ जो कुछ होगा, सारा सर्व-सेवा-संघ मान्य करेगा। यह एक व्यापक संस्था है, जिसका सारे भारत में साढ़े पाँच लाख गाँवों में काम चलता है। वह सबकी सब सेवा, कुछ व्यक्त रूप में तो कुछ अव्यक्त रूप में, करता है। इसमें कम-से-कम तीन करोड़ तो रचनात्मक कार्यकर्ता हैं। वे सारे अपने-अपने घर की खेती करते हैं। अगर ये लोग अपने घर में सर्वोदय-पात्र रखें तो वहाँ सर्व-सेवा-संघ व्यक्त हो जायगा। जब ये लोग केवल अपनी खेती करते हैं तो सर्व-सेवा-संघ अव्यक्त रूप में रहता है। इसलिए यहाँके आस-पास के हरएक गाँव और हरएक घर में सर्वोदय-पात्र रखना चाहिए। यह पहला काम है, जिससे सर्व-सेवा-संघ यहाँके घर-घर में प्रकट हो जायगा।

६. प्रश्न :—ग्रामदान होने के बाद क्या निर्माण के काम में तुरन्त ही बैठ जाना, लग जाना चाहिए?

www.vinoba.in

उत्तर :—कौन बैठेगा ? जो बैठेगा, वह बैठे। जो घूमता है, वह क्यों बैठे ? रचनात्मक काम करनेवाले हमारे पास हैं ही। उन्हीं-में से कोई बैठे और काम करे। अगर आप यह मानें कि ग्रामदानी गाँवों में बाहर से लोग आकर बैठें और काम करें तो वह असम्भव बात है। दोनों तरीके से वह असंभव है। एक तो बाहर के लोग सभी गाँवों में भेज भी नहीं सकेंगे। दूसरी बात यह है कि बाहर के लोग आयेंगे तो वे यहाँ सफल ही होंगे, ऐसा गारंटी के साथ नहीं कह सकते। तीसरी बात, मान लीजिये कि अमुक गाँव में कोई आदमी भेजा और वह सफल भी हुआ तो काम रुक जायगा। क्योंकि फिर हर गाँववाला माँग करेगा कि हमारे गाँव में अगर आप कोई आदमी भेजें तो हम ग्रामदान करने के लिए तैयार हैं। इससे ग्रामदान की अपनी शक्ति तो खड़ी नहीं होगी। इसलिए जहाँ पहले से रचनात्मक काम करनेवाले हों, वहाँ भले ही ग्रामदान हो, वे फिर वहाँ काम करेंगे। खादी, नयी तालीम, कम्युनिटी प्रोजेक्ट, एक्सटेन्शन सर्विस और गांधीनिधि से कोई-न-कोई वहाँ जाय, यह अच्छा ही है। इसमें कोई बुरी बात नहीं। किन्तु ग्रामदान हो और तुरन्त ही कोई बैठ जाय और फिर ग्रामदान के गाँव को सुन्दर बनाये तो वह कैसे बना सकता है; अगर आसपास के गाँवों में ग्रामदान न हो। आसपास के गाँवों में दूसरी हवा हो, और उस गाँव में अलग हवा हो तो सुन्दर नहीं बन सकता। कहीं ग्रामदान का सघन क्षेत्र मिला हो, पाँच-पचास गाँव इकट्ठे हुए हों, वहाँ ग्रामदान हुआ हो और लोग काम शुरू करें तो वहाँ आवश्यक होनेपर सर्वोदय कार्यकर्ता सलाह और मदद के लिए तैयार रहें—यह लाभदायक हो सकता है।

## नमूने के ग्रामस्वराज्य बनाना संभव नहीं

७. प्रश्नः—थोड़े नमूने के ग्रामस्वराज्य क्यों न बनाये जायँ ?

उत्तरः—यह सवाल समय-समय पर बहुत बार पूछा जाता है। मान लीजिये कि पाकिस्तान का हिन्दुस्तान पर आक्रमण हो जाय (मैं यह सारी कल्पना की ही बात करता हूँ। पाकिस्तान हिन्दुस्तान पर आक्रमण करनेवाला नहीं है) तो सारे देश में एक भय का वातावरण निर्माण होगा। ऐसी स्थिति में जो लोग ग्रामदान का नमूना करने के लिए बैठे हों, वे क्या करेंगे ? इसलिए अगर हम सारे देश में अपने विचार का अंकुश रखने की योजना कर सकें तो क्षेत्रविशेष में ही ग्रामस्वराज्य का नमूना पेश कर सकते हैं। परन्तु जब देश में अलग तंत्र और अलग कानून बना हो, परिस्थिति चाहे जैसी पैदा हो और मैं प्रतिज्ञा लेकर बैठूँ कि मैं तो चार-पाँच गाँवों में ग्रामस्वराज्य का नमूना बनाऊँगा तो नहीं चलेगा, उसमें मैं हार ही खाऊँगा। इतना ही नहीं, लोग हमें इस तरह एक जगह बैठ जाने के लिए प्रोत्साहन देते हैं, जो यह भलीभाँति ठीक जानते हैं कि ये लोग इसमें कुछ न कर सकेंगे, भले ही सिरफोड़ करें। जब आप सारे देश में अपने विचार की सत्ता का प्रभाव पड़नेवाली योजना करेंगे और उसके साथ कुछ गाँव लेकर बैठेंगे, तभी कहीं ग्रामस्वराज्य का नमूना पेश कर सकेंगे, अन्यथा नहीं।

नयी तालीम का एक उदाहरण देखिये "शिक्षण-विचार" नाम की मेरी एक पुस्तक है। उसमें का एक भी विचार ऐसा नहीं, जिसपर मैंने स्वयं अमल न किया हो। हर विचार अमल में लाकर और उसका परिणाम देखकर उपस्थित किया है। फिर भी सरकार का शिक्षण-कार्य जैसा चलता था, वैसा ही चलता रहा। गत वर्ष उसे सूझा कि शिक्षण के विषय में विनोबा की भी सलाह लें तो अच्छा होगा। विनोबा कोई गतवर्ष ही शिक्षण-विशेषज्ञ नहीं हुआ। उसने तो ३० साल तक शिक्षण के प्रयोग किये और उसके बाद कुछ विचार प्रकट किये। किन्तु गत वर्ष सरकार को यह सूझा कि हिन्दुस्तान के सभी प्रान्तों के मुख्य शिक्षाधिकारी, विनोबा जहाँ हों, वहाँ इकट्ठा हों। तदनुसार सब लोग आये और दो-तीन दिन तक मेरे साथ रहे। खूब बातें और चर्चाएँ हुईं। यह बात सरकार को दस साल पहले क्यों नहीं सूझी ? कारण स्पष्ट है। भूदान, ग्रामदान आदि विचार जब सफल हुआ, तभी उसे लगा कि विनोबा नाम का कोई मनुष्य है। उसकी सलाह ले सकते हैं। उसने नयी तालीम के विषय में अनुभव प्राप्त किये हैं। इसीलिए उसके उन अनुभवों की कीमत अभी मान्य हुई। आज भी यह मान्यता मिली है, पर उसका अमल होगा ही, ऐसा नहीं मानना चाहिए। फिर भी आपसे सलाह माँगी जाती है, आपसे पूछा जाता है। मैं कहना चाहता था कि इस विचार की प्रतिष्ठा देश में इसीलिए हुई कि आपमें थोड़ी व्यावहारिकता आयी है, ऐसा वे समझते हैं। तभी आपसे सलाह लेते हैं। नहीं तो आपकी सलाह कौन लेनेवाला था ?

## शान्तिसेना की आवश्यकता

अगर कहीं ग्रामस्वराज्य का नमूना बनाया जा सके तो मुझे उसकी इतनी तमन्ना है, जितनी शायद ही किसीको हो। फिर भी मेरा मानना है कि सारे हिन्दुस्तान में सर्वसाधारण वातावरण तैयार हो जाय और उसके साथ अच्छे-से-अच्छे मनुष्य एक जगह बैठकर प्रयोग करें। यह अगर हो सके तो करने जैसा है, ऐसा मुझे लगता है। किन्तु भारत में अगर शान्तिसेना तैयार हो तो ग्रामस्वराज्य का नमूना आसानी से हो सकेगा। नहीं तो फिर तमिलनाड में रामनाथपुरम् में जहाँ ग्रामदान हुआ, वहाँसे २० मील पर दंगा हो गया। अतः जब कि सारे गाँवों की हवा बिगड़ गयी हो, देश में हवा बिगाड़नेवाली शक्ति पर असर करनेवाली कोई शक्ति न हो तो हमारा कुछ भी नहीं चलेगा। इसलिए भारत में एक बार अपने विचार की सत्ता होने दीजिये, फिर अमुक क्षेत्र लेकर कोई बैठ जाय तो बहुत अच्छा काम होगा, ऐसा मैं मानता हूँ। आज भी कोई विशेष पुरुष बैठ जाय तो वह गलत काम करता है, ऐसा मैं नहीं मानता। ऐसा प्रयोग कोई करता हो तो भले ही करें। उससे कुछ लाभ ही होगा, ऐसा मैं मानता हूँ। ●

---

प्रातः-प्रवचन

भरुच (बम्बई राज्य) ४-१०-'५८

# विज्ञानयुग की माँग : बहुत-से स्थितप्रज्ञ हों

आज हम फिर से शाम को मिलनेवाले हैं। इसलिए अभी आपके दर्शन का जो आनन्द मेरे मन में है, उसीका मैं अनुभव कर रहा हूँ। उसे दो-चार शब्दों में प्रकट करना चाहता हूँ। विशेष कर आज जो लड़के-लड़कियाँ आयीं और उन सबने मिलकर मुझे स्थितप्रज्ञ के श्लोक सुनाये, वह मुझे बहुत ही अच्छे लगे।

## स्थितप्रज्ञ श्लोक सर्वधर्मीय

स्थितप्रज्ञ के ये श्लोक किसी एक धर्म के श्लोक नहीं। ये गीता में से लिये गये हैं। किन्तु हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, पारसी, यहूदी, सिख, जैन, बुद्ध—इनमें से किसी भी धर्म के ये नहीं हो सकते, ऐसा किसी प्रकार का संकोच नहीं है। ये श्लोक सबके

www.vinoba.in

काम आयेंगे। आज के जमाने के लिए स्थितप्रज्ञ की बहुत जरूरत है। यह मैं पहले भी बहुत बार कह चुका हूँ। आज फिर से इसीकी महिमा गाना चाहता हूँ।

आज विज्ञान के युग में छोटे-छोटे सवाल भी बड़े हो जाते हैं। पुराने जमाने में जो सवाल छोटे माने जाते थे, वे आज बहुत बड़े माने जाते हैं। भारतीय इतिहास में पानीपत की लड़ाई बहुत बड़ी लड़ाई मानी जाती है। किन्तु वह जब हुई, तब जापान के लोगों को उसकी खबर भी नहीं थी। लेकिन आज दुनिया के किसी भी कोने में छोटी-सी घटना हो जाय तो सारी दुनिया को उसकी खबर मालूम पड़ जाती है और सारी दुनिया पर उसका असर हो जाता है। किसी भी जगह कोई भी सवाल हो तो वह केवल स्थानिक सवाल नहीं रहता, सारी दुनिया का सवाल हो जाता है। गोवा का सवाल, कश्मीर, हिन्दचीन, कोरिया, लेबनान या अलजेरिया किसीका भी सवाल खड़ा हो तो वह स्थानिक नहीं रहता, सारी दुनिया का हो जाता है। इसीलिए पुराने जमाने में सवाल छोटे माने जाते थे, वे आज छोटे नहीं रहे, बड़े हो गये हैं।

## आज तत्काल निर्णय की शक्ति आवश्यक

अब विश्व-व्यापक सवाल खड़े हो जाते हैं और उनका निर्णय भी तुरन्त ही देने की जरूरत रहती है। पहले तो कोई भी सवाल या समस्या खड़ी होती थी तो उसका निर्णय करने के लिए चिन्तन, मनन, ज्ञान और सलाह देने के लिए अवकाश रहता था। कोई खास उतावली नहीं रहती थी कि निर्णय आज के आज ही होना चाहिए। तीन-चार महीने में निर्णय होने पर भी चल सकता था। किन्तु आज तो तुरत ही निर्णय की अपेक्षा रखी जाती है। कोई भी घटना हो जाय और वह तुरन्त ही आज के अखबारों में न आ जाय, अगर उसपर अग्रलेख नहीं आये तो अखबारवाले पिछड़ जाते हैं, वे जागृत नहीं, ऐसा कहा जाता है। इसलिए आज जो घटना बनी, उसपर मत-प्रकाशन भी आज ही होना चाहिए। कूटनीतिज्ञों को व्यापक प्रश्नों पर तुरन्त ही निर्णय देना पड़ता है। इसलिए जिसकी निर्णयबुद्धि अचूक होगी, वही मनुष्य समाज को बचा सकता है। आज सब गुणों में सर्वश्रेष्ठ गुण निर्णायक बुद्धि है। "तुरन्त निर्णय देनेवाली, ठीक निर्णय देनेवाली और डाँवाडोल न होने-वाली बुद्धि को ही निर्णायक बुद्धि कहते हैं।" कैसा भी प्रश्न खड़ा हो तो भी शान्त दिमाग से, निष्पक्ष होकर जो स्वच्छ निर्मल और निश्चित निर्णय दे सकेंगे, सबकी ओर समान प्रेम और आदर से देखेंगे तो गुण हो सकता है। किन्तु उसके बाद भी निर्णय करने की बुद्धि जिनमें हो, ऐसे स्थितप्रज्ञों की जरूरत बहुत ज्यादा है।

## बच्चों को स्थितप्रज्ञ श्लोकों का पौष्टिक आहार दें

अगर समाज में ऐसे स्थितप्रज्ञ हों और समाज को अगर लगे कि ऐसे मनुष्य की सलाह लेनी चाहिए तो समाज के लिए बहुत बड़ा रक्षण मिलेगा। ऐसे मनुष्य का पहले कभी जितना महत्त्व नहीं था, उतना आज है। स्थिर बुद्धि, निर्णय करनेवाली बुद्धि, निश्चित, निःसंशय समग्र बुद्धि, शान्त, निर्मल, तटस्थ, उदासीन, निष्पक्ष, निर्वैर, निर्भय बुद्धि—यह आज के जमाने का सर्वश्रेष्ठ गुण और अत्यन्त आवश्यक वस्तु हो गयी है। इसलिए घर-घर स्थितप्रज्ञ के लक्षणों का चिन्तन, मनन कथन आवश्यक है और तदनुसार आचरण करने की आदत सारी जनता को होगी तो प्रजा के लिए अच्छा है। अगर स्थितप्रज्ञ के श्लोकों जैसा सुंदर खाद्य छोटे बच्चों को बचपन में मिलेगा तो उनको आरम्भ में ही अत्यन्त पौष्टिक पोषण मिलेगा। खास कर इस जमाने में यह माँग है। इसलिए स्थितप्रज्ञ के लक्षणों की एक किताब मैंने लिखी है, उसका नाम है: "स्थितप्रज्ञ-दर्शन"। हिन्दुस्तान की बहुत सारी भाषाओं में उसका अनुवाद हुआ है और गुजराती में भी नवजी-वन प्रेस से वह प्रकाशित है।

## आज बहुत-से स्थितप्रज्ञ चाहिए

सारे भारत में "गीता-प्रवचन" की लाखों कापियाँ गयी हैं। जिसे उसके आगे अभ्यास करना है, उसके लिए यह "स्थितप्रज्ञ-दर्शन" ही है। केवल इन श्लोकों के पठन से काम नहीं चलेगा। उसका चिन्तन, मनन भी होना चाहिए और सारे समाज की रचना स्थितप्रज्ञ की सलाह से होनी चाहिए। अगर लोकतंत्र को यह अक्ल में आये तो जिस बात की उसमें कमी है, उसकी पूर्ति होगी। हरएक समाज और हर जमाने में कोई-न-कोई स्थितप्रज्ञ होता ही है, लेकिन आज हमें एकआध स्थितप्रज्ञ पुरुष काफी नहीं, बहुत-से स्थितप्रज्ञ होने चाहिए और हो सकते हैं। आप अर्थ-शास्त्र या समाज-शास्त्र का यह नियम जानते ही होंगे कि जैसी माँग हो, वैसा ही होता है—"आवश्यकता आविष्कार की जननी है।" इस जमाने की माँग है कि बुद्धि स्थिर चाहिए, निर्णय-बुद्धि चाहिए। इसलिए पहले के जमाने में स्थितप्रज्ञ की जितनी जरूरत थी, उससे ज्यादा संख्या में स्थितप्रज्ञों की आज जरूरत है और पूरी हो सकती है।

मेरी कल्पना में एक समय ऐसा आयेगा, जब सारा समाज प्रज्ञावान, स्वयं-प्रज्ञ होगा। स्वयं-प्रज्ञ, स्थितप्रज्ञ पुरुष विज्ञानयुग की आवश्यकता है। इसलिए स्थितप्रज्ञ के लक्षणों को केवल धार्मिक प्रवचन ही नहीं समझना चाहिए। यह समझ लीजिये कि जैसे जीवन में खाने के लिए दाल-भात, साग की जरूरत होती है, उसी तरह स्थितप्रज्ञ लोग भी अपने लिए दाल, भात, साग हैं। इस तरह अगर सारे धर्म, पंथ और विचारधारावाले इन श्लोकों को समझेंगे और भारत से प्रकटित इस शास्त्र को सीखेंगे तो सारा भारत बच जायगा और वह सारी दुनिया को भी बचायेगा।

यह मैंने बच्चों से कहा, किन्तु बड़े लोगों के लिए भी है। क्योंकि हमारी हालत लड़कों जैसी ही है। केवल उम्र बढ़ने से हमारा बचपन नहीं जाता। इसलिए मैंने जो कहा, उसे आप सभी समझ लीजिये। ● ● ●

## अनुक्रम

१. भारतीय इतिहास में नेहरू का स्थान
तरनतारन १४ नवंबर '५९ पृष्ठ ८२५
२. आज हृदय-परिवर्तन में देर न लगेगी
काशीपुरा १४ अक्तूबर '५८ „ ८२६
३. ग्राम-स्वराज्य के लिए देशव्यापी वातावरण···
रंगपुर १५ अक्तूबर '५८ „ ८२८
४. विज्ञान युग-की माँग : बहुत से स्थितप्रज्ञ हों
भरुच ४ अक्तूबर '५८ „ ८३१

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता : गोलघर, वाराणसी ( उ० प्र० ) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा', वाराणसी।
www.vinoba.in